449वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 38 | षष्ठम् अंक | जनवरी 2016

इस अंक में...

12 बचकर चलना जरूरी
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
24 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
33 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
38 नवीनतम सामान्य ज्ञान
44 खेलकूद
48 रोजगार समाचार
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
53 युवा प्रतिभाएं
61 नवोन्मेष—विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण लघु टिप्पणियाँ
64 कैरियर लेख—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा की तैयारी के लिए बनाएं रणनीति
66 स्मरणीय तथ्य
69 विश्व परिदृश्य
75 फोकस—बकाया ऋणों की वसूली : वाणिज्यिक बैंकों के भेदभावपूर्ण मानदण्ड
78 एनडीए सरकार की नई योजनाएं : एक सिंहावलोकन
85 सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2015 के लिए महत्वपूर्ण लघु टिप्पणियाँ
88 मध्यकालीन भारत—एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकों का सारांश एक नए प्रारूप में (कक्षा 6 से लेकर 12 तक)
92 सामाजिक लेख— डिजिटल बैंकिंग : महिला सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ते कदम
94 भौगोलिक लेख—पर्यावरण अवनयन और उसके कारण
96 अभियान लेख—(i) स्मार्ट सिटी मिशन के क्रियान्वयन से जुड़ी चुनौतियाँ
98 (ii) स्किल इण्डिया कार्यक्रम : युवा सशक्तिकरण की नई दिशा
101 पर्यावरण लेख—(i) कार्बन उत्सर्जन कटौती के प्रति भारत की वचनबद्धताएं एवं दृढ़ संकल्प
103 (ii) नदियों को जोड़ने की मुहिम : प्रकृति के विरुद्ध जाने का दुस्साहस
107 कृषि लेख—कृषि क्षेत्र में हाइड्रोपोनिक्स तकनीक की उपयोगिता
109 सिविल सेवा परीक्षा हेतु विशेष—सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों में नियुक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से विधायिका एवं न्याय-पालिका के बीच सर्वोच्चता का मुद्दा
112 सार संग्रह
115 सामान्य अध्ययन—सिविल सेवा मुख्य परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
120 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन—(i) मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2014
125 (ii) उ.प्र. पी.सी.एस. वन विभाग सहायक संरक्षक परीक्षा, 2013
133 (iii) नाबार्ड असिस्टेंट मैनेजर (ग्रेड 'ए' और 'बी') परीक्षा, 2015
135 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
137 ऐच्छिक विषय—(i) गृह विज्ञान— यू.जी.सी.-नेट/जे. आर.एफ. परीक्षा, 2014
143 (ii) भूगोल—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा 2014
149 विविध तथ्य—(i) राजस्थान की वर्तमान विकास योजनाएं
151 (ii) दक्षिण-दक्षिण सहयोग का आह्वान करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय मंच/संगठनों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य (एक दृष्टि में...)
153 तर्कशक्ति—आई.डी.बी.आई. एक्जीक्यूटिव ऑफीसर्स परीक्षा, 2015
158 संख्यात्मक अभियोग्यता—यूनाइटेड इण्डिया इन्श्योरेन्स कम्पनी प्रशासनिक अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2015
163 क्या आप जानते हैं ?
164 अपना ज्ञान बढ़ाइए
165 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में और तत्पश्चात् सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका
167 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—438 का परिणाम
168 अर्द्धवार्षिकांक

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

बचकर चलना जरूरी

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''चाहे वे कितने ही प्रतिभाशाली क्यों न हों, स्वयं को प्रेरित करने में असमर्थ लोगों को औसत परिणामों से ही सन्तुष्ट होना पड़ता है.''

– एण्ड्रू कार्नगी

यह जीवन एक प्लेटफॉर्म या चौराहे की भाँति है. यहाँ से बहुत प्रकार की धाराएं निकलती हैं. हम में से हरएक को अपने लिए मार्ग चुनना है. हमारी दिशा का निर्धारण कोई अन्य नहीं करेगा और न ही हमारी दशा का. यहाँ हरएक व्यक्ति अपनी आन्तरिक प्रेरणाओं से ही दिशा निर्धारित करता है एवं भीतरी अवस्थाओं व समझ के स्तर के अनुरूप ही दशा को प्राप्त होता है.

हमारा वह चुनाव जो हमें अधिकाधिक उच्च स्तर का सुख, वैभव व शांति प्रदान करे, हमारे अन्तःकरण को प्रफुल्लित व सक्षम बनाए. 'योग्य चुनाव' कहलाता है, किन्तु जिसके परिणाम में दुःख, दरिद्रता, अशांति, उदासी, पीड़ा आते हैं. वह 'अयोग्य चुनाव' है. चूँकि हमें अपने हर चुनाव का परिणाम भोगना ही पड़ता है, इसीलिए हमें चुनाव प्रक्रिया को जानना भी जरूरी है. समझना आवश्यक है.

हम जिसको सुनना, देखना, सूँघना, चखना व छूना पसंद करते हैं, उसको ही तलाशते हैं. प्रायः हमारी पसंद हमारे चुनाव का मापदण्ड बनती है. हमारी पसंद का परिवर्तन हमारी अपेक्षाओं व समझदारी में निहित है. जब हमारी अपेक्षाएं बदल जाती हैं, पसंद भी बदल जाती हैं. जैसे जिन गायों से दूध मिलना बंद हो जाता है, गाय का मालिक उन्हें पसंद करना, प्यार करना छोड़ देता है. वह कई बार तो उन्हें बेच भी डालता है. जिन खिलौनों से मन भर जाता है, बच्चा उन्हें छोड़ या तोड़ देता है. अपेक्षाएं बदल गईं तो लोग मित्र, सम्बन्धी व परिवारजनों को भी छोड़ देते हैं. यद्यपि यह उदाहरण नकारात्मक दिए गए हैं, परन्तु ऐसे कई सकारात्मक मुद्दे भी होते हैं. जहाँ इंसान अपनी पसंद को बदल लेता है, परन्तु उसे फिर समझदारी के कारण हुआ बदलाव कहते हैं. जैसे जिस विषय के चुनाव से ज्यादा लाभ व कम मेहनत पड़े, अधिक उपयोग व कम प्रदूषण हो, उसे चुनना.

एक सरल, सुखद एवं निष्कंटक जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि ऐसी रीतियों, क्रियाओं, कार्यों से यथासम्भव बचा जाए जो जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है.

अध्यात्म ज्ञान के ज्योतिर्पुंज श्री विराट गुरुजी ने किसी समय कहा था कि मनुष्य को चार स्थानों से बचकर चलना चाहिए–